सेमेस्टर-2

नागमती का वियोग- खंड

पद- संख्या-2

भूमिका:- प्रस्तुत पंक्तियां सूफी कवि मलिक मोहम्मद जायसी द्वारा रचित प्रेमाख्यान काव्य परंपरा के महाकाव्य पद्मावत से ली गई है, जिन्हें आचार्य रामचंद्र शुक्ल द्वारा संपादित जायसी ग्रंथावली में नागमती वियोग खंड के अंतर्गत संकलित किया गया है।

प्रसंग:- जब राजा रत्नसेन परदेश चले जाते हैं, तो उनकी पत्नी रानी नागमती विरह- वेदना में डूब जाती है। उपर्युक्त पंक्तियों में जायसी ने इसी विरह – व्यथा का वर्णन किया है।

व्याख्या:- प्रिय के वियोग में नागमती पागल- सी हो गई थी और पपीहे के समान पिउ-पिउ पुकारते रहती थी। कामाग्नि उसे निरंतर जला रही थी। हीरामन तोता प्रियतम के नाम का भी अपने साथ हरण कर ले गया। विरह के तीक्ष्ण वाण की वजह से वह हिल- डुल भी नहीं पा रही थी। शरीर से ऐसा लगता था कि रक्त निकल रहा था जिसकी वजह से उसकी चोली भी भीग गई थी। उसका वक्षस्थल सूख गया था और वह इतनी दुर्बल हो गई थी कि उसके गले में पड़ा हुआ हार भी उसे भार-स्वरूप प्रतीत हो रहा था। उसके शरीर की समस्त नाड़ियों धीरे-धीरे प्राण- हीन होती जा रही थीं। दीर्घ निश्वास के कारण एक क्षण के लिए उसमें सांस आती थी और अगले ही क्षण निराशा के साथ निकल जाती थी। वह विरह के कारण मरणासन्न अवस्था में पहुंच गई थी। उसकी सखियां उसकी इस दशा को देखकर कभी उस पर पंखे से हवा करतीं, तो कभी शरीर पर जल के छींटे मारतीं। अत्यंत कठिनाई से एक प्रहर के उपरांत उसकी चेतना लौटती और वह कुछ बोलने की कोशिश करती, लेकिन उसके शब्द स्पष्ट समझ नहीं आते। विरह- वेदना के कारण उसके प्राण निकले जा रहे थे। कौन है जो उसकी रक्षा करेगा? कौन है जो उसे उसके प्रिय की मधुर वाणी सुनाएगा?

विरह के मारों के मुख से निकली आह से शरीर ऐसा जलता है कि उसके अंदर रहने वाले प्राण रूपी हंस के पंख जल जाते हैं और वह उड़ना चाहता है।

विशेष:- 1. अतिशयोक्ति ढंग से विरह वेदना का वर्णन किया गया है।

2. उपर्युक्त पंक्तियों की भाषा अवधी है।

डॉ. प्रकाश कुमार अग्रवाल

हिंदी- विभाग, खड़गपुर कॉलेज